International Journal of Physical Education, Sports and Health 2016; 3(1): 305-308

P-ISSN: 2394-1685
E-ISSN: 2394-1693
Impact Factor (ISRA): 5.38
IJPESH 2016; 3(1): 305-308
© 2016 IJPESH
www.kheljournal.com
Received: 17-11-2015
Accepted: 18-12-2015

डॉ0 शिल्पा शर्मा
अतिथि विद्वान शारीरिक शिक्षा, शासकीय महाविद्यालय, मैहर जिला सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

Correspondence
डॉ0 शिल्पा शर्मा
अतिथि विद्वान शारीरिक शिक्षा, शासकीय महाविद्यालय, मैहर जिला सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

रीवा संभाग के महाविद्यालयीन छात्राओं में खिलाड़ी और गैर खिलाड़ी के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद का सकारात्मक प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ0 शिल्पा शर्मा

सारांश
शोधार्थी ने खेलकूद का मानव जीवन में महत्व देखकर उससे होने वाले लाभों के संदर्भ में महाविद्यालयीन छात्राओं में खिलाड़ी और गैर खिलाड़ी के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद का सकारात्मक प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। इस शोध अध्ययन में शोधार्थी ने रीवा संभाग के चारों जिलों को न्यादर्श के रूप में लिया, प्रत्येक जिलें से 05 महाविद्यालय चयनित किये गयें इन महाविद्यालयों से 02 शिक्षक/क्रीड़ाधिकारी एवं 02 अभिभावक, प्रत्येक महाविद्यालय से चयनित किये गयें। इस प्रकार पूरे संभाग से 20 महाविद्यालय, 20 प्राचार्य, 40 शिक्षक/क्रीड़ाधिकारी एवं 40 अध्ययनरत छात्राओं के अभिभावकों का चयन किया गया। इसके अतिरिक्त इस अध्ययन में 200 छात्राओं का भी रेण्डम विधि द्वारा चयन किया, जिनमें 100 खिलाड़ी एवं 100 गैर खिलाड़ी छात्रायें सम्मलित है। प्रत्येक महाविद्यालय से 05 खिलाड़ी एवं 05 गैर खिलाड़ी छात्रायें चुनी गई, जिन पर उपकरणों को शासित कर परिणाम प्राप्त किये गये। शोध क्षेत्र में 80.00 प्रतिशत प्राचार्य, 77.5 प्रतिशत क्रीड़ाप्रभारी एवं 62.50 प्रतिशत अभिभावकों के अनुसार यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद का प्रभाव सकारात्मक होता है।

शब्द कुंजी : रीवा संभाग, महाविद्यालय, व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति, सकारात्मक प्रभाव एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन।

प्रस्तावना
खेल एक स्वाभाविक, जन्मजात एवं प्रकृति जन्य क्रिया है, जो मानसिक, शारीरिक विकास के साथ–साथ सौन्दर्य एवं चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बालक, अनजान अवस्था से ही खेलने की अभिरुचि प्रकट करता है, बिना यह जानते हुये कि वह क्या खेल रहा है, इसका क्या परिणाम होगा और कभी–कभी इसी बचपने खेल के दुष्परिणाम भी सामने आते हैं। खेल में एक आनन्द की अनुभूति होती है और खेल से प्राप्त संतुष्टि का अनुभव केवल खिलाड़ी ही कर सकता है। खेल से टीम भावना, प्रतिस्पर्धा, भाईचारा तथा अपनापन की भावना विकसित होती है, यह जाति, धर्म, रंग, लिंग एवं राष्ट्रीयता के संकुचित दायरे से अलग क्रिया है। किसी राष्ट्र का विकास उसके स्वस्थ्य नागरिकों के ऊपर निर्भर करता है। शारीरिक स्वास्थ्य का सीधा सम्बन्ध मन से है, जब तन स्वस्थ्य एवं सुन्दर होगा तभी मानसिक स्वस्थता एवं ताजगी प्रदर्शित होगी। अतः खेल एवं व्यायाम मानव जीवन के लिये आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य भी है।

मानव प्रकृति का सबसे अधिक क्रियाशील व सृजनात्मक प्राणी है और शारीरिक कार्यकलाप विकासवाद से ही उसके जीवन का एक अभिन्न हिस्सा रहे हैं। आदिम मानव के लिए भोजन और आश्रय की तलाश ही उसकी पहली क्रियाशीलता थी। इसकी यह पहली शारीरिक क्रियाशीलता उसके जीवित रहने की नैसर्गिक आवश्यकता थी। शारीरिक क्रियाशीलता कही संचार का माध्यम बनी, इसे सम्प्रेषण के रूप में भी लिया जा सकता है। जैसे–जैसे मानव ने सांस्कृतिक, भावनात्मक और सामाजिक रूप से विकास किया उसी तरह से शारीरिक क्रियाशीलता भी बढ़ती गयी। जैसे–जैसे समाज जटिल होता हुआ आधुनिक युग तक पहुँचा वैसे–वैसे ही शारीरिक क्रियाशीलता एक संगठित और निरीक्षणात्मक रूप में होती गयी और शारीरिक शिक्षा के नाम से जानी जाने लगी।

हारोल्ड एम0 बैरो
''शारीरिक शिक्षा वह शिक्षा है जो मानव क्रियाशीलता से ही आती है, जहाँ शिक्षा के बहुत से लक्ष्यों की प्राप्ति बाहुबल से होती है जिनमें क्रीड़ाएँ, खेल, जिम्नास्टिक, नृत्य और व्यायाम आदि सम्मिलित रहते हैं।''

हाल ही के वर्षों के दौरान आंदोलन शारीरिक शिक्षा की व्याख्या के सशक्त विकल्प के रूप में उभरा है और वह भी एक भिन्न दृष्टिकोण और शारीरिक शिक्षा की भिन्न शिक्षण प्रक्रिया को लेकर। मानव कार्य व्यापार अभिव्यक्ति के साधन, अन्वेषण, विकास और व्यक्ति की स्वयं की व्याख्या और पूरे विश्व के साथ उसके सम्बन्ध की योग्यता पर बल देता है। फिटनेस की प्रवृत्ति आज काफी लोकप्रिय हो गई है क्योंकि आधुनिक साइवर युग में फिटनेस और स्वास्थ्य की हमारे समाज में ज्यादा दरकार है। साइवर युग में हमारे ऊपर कई भारी स्वास्थ्य समस्याएँ आ खड़ी हुई हैं जिसने समाज का ध्यान अपनी ओर खींचा है। आधुनिक शारीरिक शिक्षा दर्शनों ने खेलों व शारीरिक शिक्षा दोनों पर अत्यधिक प्रभाव डाला है। यह प्रभाव आत्म विकास, आत्मवृद्धि और अन्तरः वैयक्तिक सम्बन्धों के माध्यम से डाला गया है। शारीरिक क्रियाकलापों के दौरान साहसिक अनुभव जिसमें जोखिम व चुनौतियाँ दोनों शामिल होते हैं, विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से व्यक्तिगत विकास और सामाजिक दक्षता सिखाते हैं।

शारीरिक शिक्षा ने आज के युग में विशेष सार्थकता, अद्वितीय भूमिका और असीमित योगदान दिया है जैसे कि जैविक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक जरूरतों को पूरा करना। स्वामी विवेकानन्द ने बल दिया है कि, ''भारत को आज भगवत गीता की नहीं बल्कि फुटबाल के मैदान की जरूरत है।'' शारीरिक शिक्षा की न केवल वर्तमान बल्कि भविष्य में भी महान् उपयोगिता है। शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व पर बल देते हुए रोशयू ने कहा है, ''यह शरीर का ठोस गठन ही है जो मन का सही और निश्चित संचालन करता है।'' सेकेण्डरी एजुकेशन कमीशन भी शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व से परिचित था उसने कहा था कि, ''देश के युवा का शारीरिक कल्याण राज्य के मुख्य सरोकारों में से एक होना चाहिए और जीवन की इस अवधि में शारीरिक कल्याण के सामान्य नियमों से भागने के गम्भीर परिणाम हो सकते हैं।''

आज भारतीय महिलायें खेलों के क्षेत्र में विश्व को कड़ी चुनौती दे रही है। जिसका प्रमाण है कि ओलम्पिक में पदक, विश्व चैम्पियनशिप में पदक, एशियार्ड में पदक आदि। भारतीय महिलाओं का आज विश्व के हर क्षेत्र में लोहा माना जा रहा है इसी तथ्य को ध्यान में रखकर महाविद्यालयीन छात्राओं में खिलाड़ी और गैर खिलाड़ी के व्यक्तित्व, अभिवृत्ति और सामाजिक स्तर का पता लगाना आवश्यक है। किसी भी राष्ट्र का विकास स्वस्थ्य नागरिकों द्वारा ही संभव है शरीर के स्वास्थ्य के लिए खेल एवं व्यायाम ही एक विकल्प है। इतिहास में जब हम दृष्टि डालते हैं तो देखते है कि विभिन्न प्रकार के खेलों और व्यायामों का प्रचलन सदैव रहा है। समाज के विकास में महिलाओं की बराबर की हिस्सेदारी रही है महिलाओं की समाज के सभी क्षेत्रों में बराबर की हिस्सेदारी को देखते हुए महिला खिलाड़ी छात्राओं और गैर–खिलाड़ी छात्राओं के व्यक्तित्व का अध्ययन आवश्यक है।

व्यक्तित्व

नवजात शिशु अपने साथ जन्मजात शक्तियों को लेकर आता है, उससे व्यक्तित्व का विकास होता है। व्यक्तित्व के विकास में निम्नलिखित चार प्रकार के मुख्य प्रभाव व्यक्ति के ऊपर पड़ते हैं, जो इस प्रकार है–

1. शरीर का बाह्य रूप शक्ति एवं गठन व्यक्तित्व के स्पष्ट संकेत नहीं है, तथापि ये स्पष्ट रूप से व्यक्तित्व के विकास पर प्रभाव डालते हैं।
2. **ग्रन्थि रचना –** आन्तरिक ग्रन्थि स्त्राव का व्यक्तित्व विकास पर बड़ा प्रभाव पड़ता है, ये ग्रन्थियाँ व्यक्तित्व ग्रन्थियों के नाम से पुकारी जाती हैं। इनमें से कुछ प्रमुख ग्रंथियाँ निम्नलिखित है– एड्रिनल ग्रन्थि, गोनेडियल ग्रन्थि, थायरायड ग्रन्थि, पिट्यूटरी ग्रन्थि, थाइमस तथा पीनियल ग्रन्थियाँ।
3. **वातावरण का प्रभाव –** वातावरण संबंधित तत्व भी व्यक्ति के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते हैं। वातावरण के प्रभाव तथा व्यक्ति एक विशेष प्रकार का व्यक्तित्व अपने उस सामाजिक वातावरण से अर्जित करता हैं।
4. **सीखना –** शारीरिक शिक्षा की गतिविधियों में मानव का शिक्षण निरन्तर चलता रहता है, तथा लगातार नये अनुभव प्राप्त होते रहते हैं। ये अनुभव संचित भी होते रहते हैं। इस प्रकार शारीरिक शिक्षा की गतिविधियों में व्यक्तित्व के सीखने पर उन अनुभवों का प्रभाव पड़ता रहता है। इस प्रकार के नये विचारों का प्रभाव हमारें व्यक्तित्व के विकास पर अवश्यमेव पड़ता है।

अभिवृत्ति

अभिवृत्ति मानव क्षमता का एक प्रमुख अंश है। अभिवृत्ति से तात्पर्य किसी विभिन्न क्षेत्र में कौशल या ज्ञान प्राप्त करने की अर्जित या जन्मजात क्षमता से होता है। फ्रीमैन (1962) के अनुसार, अभिवृत्ति से तात्पर्य ''गुणों या विशेषताओं के एक ऐसे संयोग से होता है जिससे विशिष्ट ज्ञान तथा संगठित अनुक्रियाओं के सेट के कौशल जैसे किसी भाषा बोलने की क्षमता, संगीतज्ञ बनने की क्षमता तथा यॉत्रिक कार्य करने की अर्जित क्षमता का पता चलता है। करीब–करीब इसी अर्थ में टुकमैन (1975) ने भी अभिवृत्ति को परिभाषित किया और कहा है, ''क्षमताओं या अन्य गुणों के ऐसे संयोग को जो चाहे जन्मजात हो या, अर्जित, ज्ञात हो या जिससे किसी विशेष क्षेत्र में प्रवीणता विकसित करने या व्यक्ति के सीखने की क्षमता का पता चलता हो, अभिवृत्ति कहा जाता है।'' अभिवृत्ति के इन परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर हमें निम्नांकित तथ्य प्राप्त होते हैं–

1. अभिवृत्ति व्यक्ति में किसी विशेष क्षेत्र में निपुणता ज्ञात करने की एक अन्तःशक्ति से होती है। जैसे– किसी व्यक्ति में उत्तम गाना गाने की अन्तःशक्ति हो सकती है।
2. अभिवृत्ति में जो अन्तःशक्ति होती है, वह जन्मजात भी हो सकती है या फिर अर्जित भी हो जाती है। जैसे– व्यक्ति में गाना गाने की क्षमता जन्मजात हो सकती है या उसके विशेष प्रयासों से भी उसमें विकसित हो सकती है।
3. अभिवृत्ति के आधार पर भविष्य में व्यक्ति के निष्पादन के बारे में एक स्थूल अंदान लगाया जा सकता है। जैसे यदि किसी व्यक्ति में गाना गाने की अभिक्षमता है, तो यह पूर्वकथन किया जा सकता है कि वह व्यक्ति भविष्य में इस क्षेत्र में अच्छी निपुणता विकसित कर सकता है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

खिलाड़ी छात्राओं का व्यक्तित्व एवं उनकी अभिवृत्ति गैर खिलाड़ी छात्राओं की तुलना में अच्छी होती है, जिससे छात्राओं को अपने सर्वांगीण विकास का अवसर प्राप्त होता है। यह शोध महिलाओं को समाज से जोड़ेगा, क्योंकि खिलाड़ी महिलाएँ ज्यादा लोकप्रिय होती हैं। यह उनके व्यक्तिगत गुणों एवं उनकी क्षमताओं का ज्ञान करता है। इस शोध के द्वारा खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्राओं के स्वास्थ्य एवं कार्यकुशलता का मूल्यांकन भी हो सकेगा, शोध क्षेत्र की छात्राओं में खेल के प्रति अभिरुचि पैदा होगी, और वे अपने अन्दर की कमजोरियों को दूर कर एक सशक्त नारी के रूप में अवतरित होगी।

यह शोध निम्न प्रकार से महत्वपूर्ण होगा –

- गैर खिलाड़ी छात्राओं को खेलकूद में भाग लेने के लिए प्रेरित, उत्साहित एवं मार्गदर्शित करेगा।
- महिला खिलाड़ी के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगा।
- महिला खिलाड़ियों में अपने व्यक्तिगत गुणों, योग्यताओं, क्षमताओं, ताकत व कमजोरियों का सही ज्ञान के लिए यह शोध प्रबन्ध मार्गदर्शन का कार्य करेगा।

उद्देश्य

अध्ययन की सम्पूर्णता उसके कार्य उद्देश्य पर निर्भर करती है। वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में खेलकूद एवं व्यायाम के प्रति धारणा अलग–अलग है। प्रत्येक मनुष्य अपने व्यक्तित्व के कारण अन्य प्राणी जीवों से भिन्न है तथा मनुष्य को

उच्च बौद्धिक शक्ति प्राप्त है। यदि मनुष्य में मन और विवेक न हो तो व्यक्तित्व का अर्थ नहीं रह जाता। मनुष्य एक साइकोफिजिकल जीव है, खेलकूद तथा व्यायाम मनुष्य के सामाजिक जीवन पर विशेष रूप से प्रभाव डालते है। मनोवैज्ञानिक व शारीरिक विज्ञान के विशेषज्ञों ने सदियों से अच्छे सुसंगठित शरीर को खास प्राथमिकता दी है तथा इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अनुसंधानकर्ता द्वारा अनुसंधान कार्य को निम्न उद्देश्यों के साथ अपने हाथ में लिया।

परिसीमांकन

शोध क्षेत्र का परिसीमन शोध कार्य के दोनो पक्षों भौगोलिक एवं अध्ययन की विषय वस्तु के आधार पर निम्नानुसार किया गया है–

1. **भौगोलिक परिसीमन –** शोध अध्ययन के रूप में, रीवा संभाग में स्थित चारों जिले रीवा, सतना, सीधी एवं सिंगरौली लिये गये है। इन जिलों में संचालित महाविद्यालय अध्ययन की परिसीमा में आवेगें। इन महाविद्यालयों में अध्ययनरत खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्राओं को अध्ययन की परिसीमा में लिया गया है।
2. **विषय वस्तु का परिसीमन –** अध्ययन की विषय वस्तु खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति के तुलनात्मक अध्ययन पर परिसीमित है। शोधार्थी शोध क्षेत्र में छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद के प्रभाव का अध्ययन करेगा, साथ ही इन दोनों प्रकार की छात्राओं के व्यक्तित्व की तुलना एवं स्वास्थ्य की जानकारी भी प्राप्त करेगा। शोधार्थी महाविद्यालयों में खेल सुविधाओं की स्थिति, छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक स्तर का भी अध्ययन अपने शोध में किया है।

न्यादर्श

शोधार्थी ने न्यादर्श की परिसीमा के रूप में रीवा संभाग के चारों जिलों को लिया है। प्रत्येक जिले से 05 महाविद्यालयों का चयन किया गया है। प्रत्येक महाविद्यालय से 02 शिक्षक / क्रीड़ाधिकारी एवं 10 छात्राओं का चयन जिनमें 05 खिलाड़ी व 05 गैर खिलाड़ी छात्राएँ होगी। महाविद्यालयों में अध्ययनरत 40 छात्राओं के अभिभावकों को भी अध्ययन में न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। इस प्रकार पूरे शोध क्षेत्र से 20 महाविद्यालय, 20 महाविद्यालयीन प्राचार्य, 40 अभिभावक, 40 शिक्षक/ क्रीड़ाधिकारी एवं 200 छात्राओं का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। 200 छात्राओं में 100 खिलाड़ी एवं 100 गैर खिलाड़ी छात्राएँ सम्मिलित हैं। न्यादर्श चयन में रेण्डम विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन पद्धति

शोधार्थी का शोध वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण मूलक अनुसंधान की श्रेणी में आता है। शोध कार्य के दौरान निम्न शोध विधियों एवं उपकरणों का समावेश किया गया है–

1. सर्वेक्षण विधि
2. अवलोकन विधि

चयनित विधियों में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. साक्षात्कार पत्रक
2. प्रश्नावली

शोध क्षेत्र से संबंधित पूर्व में किये गये कार्यो की संक्षिप्त समीक्षा

किसी भी अध्ययन कार्य को करने से पहले उस विषय से संबंधित पूर्व विद्वानों के कार्यो का अवलोकन उससे संबंधित साहित्य के अध्ययन से अध्ययन कार्य में सहायता मिलती है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी ने अपने सीमित प्रयासों से नजदीकी विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में भ्रमण किया तथा विषय से संबंधित पूर्व में किए गए अनुसंधानों का अध्ययन किया, जो निम्नानुसार है– मिश्र, रामभूषण (2004), शर्मा राकेश (2005–06), शुक्ला राज नारायण (2007) एवं त्रिपाठी प्रेमचन्द्र, मिश्र डॉ. सूर्य प्रसाद (2000) ने खिलाड़ी और गैर खिलाड़ियों के बीच मनोवैज्ञानिक अंतर, सामाजिक एवं आर्थिक, खेल कौशल का अध्ययन किया।

प्रदत्तों का सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र में संकलित किये गये प्रदत्तों का सारणीयन कर उनका विश्लेषण एवं व्याख्या की गई प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्नानुसार हैं–

तालिका 1: शोध क्षेत्र में छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद के प्रभाव का अध्ययन (प्राचार्य साक्षात्कार पत्रक के आधार पर)

क्र.	रीवा संभाग के जिलों के नाम	न्यादर्श में चयनित महाविद्यालयों की संख्या	न्यादर्श में चयनित प्राचार्यों की संख्या	छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद का प्रभाव					
				सकारात्मक है		सकारात्मक नहीं हैं		नहीं पता	
				संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.
1.	रीवा	05	05	04	80.00	01	20.00	00	00.00
2.	सतना	05	05	04	80.00	00	00.00	01	20.00
3.	सीधी	05	05	04	80.00	00	00.00	01	20.00
4.	सिंगरौली	05	05	04	80.00	01	20.00	00	00.00
योग		**20**	**20**	**16**	**80.00**	**02**	**10.00**	**02**	**10.00**

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त तालिका क्रमांक 1 में महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यक्तिगत एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद के प्रभाव का अध्ययन, प्राचार्य साक्षात्कार पत्रक के आधार पर किया गया है। शोध क्षेत्र में कार्य कर रहें संभाग के 20.00 महाविद्यालयों के प्राचार्य से साक्षात्कार के माध्यम से प्रश्न पूछे गयें। रीवा संभाग के 80 प्रतिशत प्राचार्यों का मानना हैं, कि छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद का प्रभाव सकारात्मक है। जबकि 20.00 प्रतिशत इसका प्रभाव सकारात्मक नहीं मानतें। सतना एवं सीधी जिलों के 20.00 प्रतिशत प्राचार्यो का कहना हैं, कि छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद के प्रभाव के कारणों से वे भिज्ञ नहीं हैं।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि खेलकूद का प्रभाव, छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर सकारात्मक प्रभाव होता है।

तालिका 2: शोध क्षेत्र में छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद के प्रभाव का अध्ययन (शिक्षक / क्रीड़ाधिकारी प्रश्नावली पत्रक के आधार पर)

क्र.	रीवा संभाग के जिलों के नाम	न्यादर्श में चयनित महाविद्यालयों की संख्या	न्यादर्श में चयनित शिक्षकों/ क्रीड़ाधिकारियों की संख्या	छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद का प्रभाव					
				सकारात्मक है		सकारात्मक नहीं हैं		नहीं पता	
				संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.
1.	रीवा	05	10	09	90.00	01	10.00	00	00.00
2.	सतना	05	10	07	70.00	02	20.00	01	10.00
3.	सीधी	05	10	07	70.00	02	20.00	01	10.00
4.	सिंगरौली	05	10	08	80.00	01	10.00	01	10.00
योग		**20**	**40**	**31**	**77.50**	**06**	**15.00**	**03**	**7.50**

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त तालिका क्रमांक 2 में छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद के प्रभाव का अध्ययन, शिक्षक एवं क्रीड़ाधिकारी प्रश्नावली के आधार पर किया गया। न्यादर्श के रूप में संभाग के 20 महाविद्यालयों से 40 शिक्षक एवं क्रीड़ाधिकारियों को चुना गया है, जिन पर प्रश्नावली शासित कर उनके मत प्राप्त किये गये हैं।

रीवा जिले के 90 प्रतिशत, सतना एवं सीधी जिले के 70 प्रतिशत एवं सिंगरौली के 80 प्रतिशत, शिक्षक / क्रीड़ाधिकारियों का मानना हैं, कि खेलकूद का प्रभाव छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर सकारात्मक होता है। इसके विपरीत सतना एवं सीधी के 20 प्रतिशत तथा रीवा एवं सिंगरौली जिले के 10 प्रतिशत क्रीड़ाधिकारी मानते हैं, कि खेलकूद का प्रभाव छात्राओं की अभिवृत्ति एवं व्यक्तित्व पर सकारात्मक नहीं होता है। सतना, सीधी एवं सिंगरौली के 10 प्रतिशत शिक्षक ऐसे भी है, जो इसके प्रभाव से भिज्ञ नहीं है।

तालिका 3: शोध क्षेत्र में छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद के प्रभाव का अध्ययन (अभिभावक साक्षात्कार पत्रक के आधार पर)

क्र.	रीवा संभाग के जिलों के नाम	न्यादर्श में चयनित महाविद्यालयों की संख्या	न्यादर्श में चयनित अभिभावकों की संख्या	छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद का प्रभाव					
				सकारात्मक है		सकारात्मक नहीं हैं		नहीं पता	
				संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.
1.	रीवा	05	10	07	70.00	02	20.00	01	10.00
2.	सतना	05	10	06	60.00	02	20.00	02	20.00
3.	सीधी	05	10	06	60.00	02	20.00	02	20.00
4.	सिंगरौली	05	10	06	50.00	02	20.00	02	20.00
योग		**20**	**40**	**25**	**62.50**	**08**	**20.00**	**07**	**17.50**

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त तालिका क्रमांक 5.3 में अभिभावक साक्षात्कार पत्रक के माध्यम से, छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद के प्रभाव की जानकारी संकलित की गई है। न्यादर्श के रूप में पूरे संभाव से 40 छात्राओं के अभिभावकों का चयन किया गय है, प्रत्येक जिले से 10 अभिभावक शोध हेतु चयनित किये गयें है।

सतना एवं सीधी जिलों के 60 प्रतिशत अभिभावक तथा रीवा जिले के 70 प्रतिशत अभिभावक मानते हैं, कि छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद का प्रभाव सकारात्मक होता है, जबकि संभाग के 20 प्रतिशत अभिभावकों का मानना हैं, कि खेलकूद का प्रभाव, सकारात्मक नहीं होता। संभाग के 17.50 प्रतिशत ऐसे भी अभिभावक हैं, जो छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद के प्रभाव को नहीं जानते।

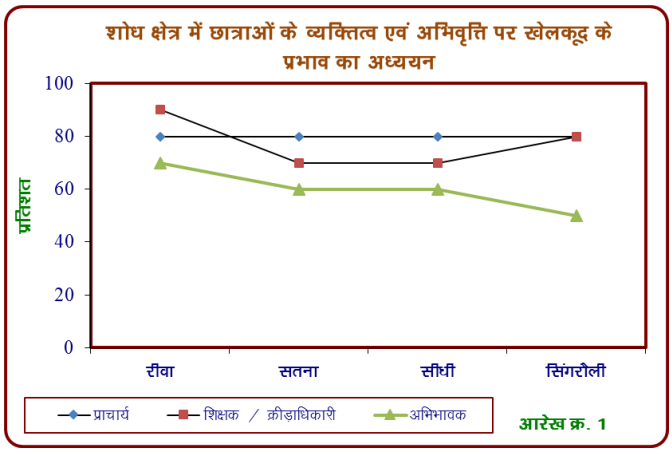

आरेख क्र. 1

उपरोक्त तालिका क्रमांक – 1, 2 एवं 3 एवं आरेख क्र.1 के विश्लेषण से निष्कर्ष प्राप्त होता हैं, कि शोध क्षेत्र में छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद का प्रभाव सकारात्मक होता है।

निष्कर्ष

- शोध क्षेत्र में छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद का प्रभाव सकारात्मक बताने वाले प्राचार्यों का प्रतिशत 80.00 है, जबकि 10 प्रतिशत खेलकूद का प्रभाव सकारात्मक नहीं मानते, 10 प्रतिशत प्राचार्य इस सम्बन्ध में जानकारी से भिज्ञ नहीं है। (तालिका क्रमांक–1)
- छात्राओं के 77.5 प्रतिशत क्रीड़ाप्रभारी शिक्षक मानते हैं, कि छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद का प्रभाव सकारात्मक है, जबकि 15 प्रतिशत शिक्षक इसका प्रभाव सकारात्मक नहीं मानते है। 7.5 प्रतिशत शिक्षक खेलकूद के प्रभाव से भिज्ञ नहीं है। (तालिका क्रमांक–2)
- महावद्यिालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के 62.50 प्रतिशत अभिभावकों के अनुसार व्यक्तित्व एवं अभिवृत्ति पर खेलकूद का प्रभाव सकारात्मक होता है, जबकि 20 प्रतिशत इसका प्रभाव सकारात्मक नहीं मानते। शोध क्षेत्र के 17.50 प्रतिशत ऐसे भी अभिभावक है, जिन्हें इस संबंध में कोई जानकारी नहीं है। (तालिका क्रमांक–3)

सुझाव

- खेल के प्रभारी शिक्षकों को ज्यादा प्रशिक्षित कराया जाय साथ ही क्रीड़ाधिकारियों को रिफ्रेशर कोर्स कराया जाय।
- छात्राओं को लिंग भेद के अनुरूप खेल सामग्री प्रदान की जाय अर्थात् छात्राओं के खेल सामग्री की पूर्ति महाविद्यालयों में की जाय।
- क्रीड़ाधिकारियों के कार्यो का सतत् निरीक्षण करना चाहिये। जहॉ पर क्रीड़ाधिकारी नहीं है, उन रिक्त पदों को प्रशिक्षित क्रीड़ाधिकारी से भरा जाना चाहिये।
- क्रीड़ाधिकारियों को चाहिये कि वे छात्राओं की समस्याओं का निराकरण धैर्यपूर्वक, सरलता पूर्वक एवं सही ढंग से करें।
- खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्राओं को व्यक्तित्व विकास एवं ध्यान एकाग्रता बढ़ाने हेतु योग तथा व्यायाम की व्यवस्था होनी चाहिए।

सन्दर्भ

1. मिश्र रामभूषण – "रीवा जिले में वि.वि. स्तरीय खिलाड़ियों का सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन" कुरुक्षेत्र वि.वि. कुरुक्षेत्र 2004.
2. शर्मा राकेश – "रीवा जिले के बास्केटबाल प्रशिक्षणार्थी खिलाड़ियों के खेल कौशल के विकास का आलोचनात्मक अध्ययन" अ.प्र. सिंह वि.वि. रीवा 2005–06.
3. शुक्ला राज नारायण – खेल एवं शारीरिक शिक्षा, राजीव प्रकाशन, 123, स्वामी विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद, 2007.
4. त्रिपाठी प्रेमचन्द्र, मिश्र डॉ सूर्य प्रसाद – शारीरिक शिक्षा एवं क्रीड़ा मनोविज्ञान, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, बानगंगा, भोपाल, मध्य प्रदेश, 2000'.